19-3-02

अब मनसा द्वारा अनुभूति कराने और वाचा द्वारा सन्देश देने की सेवा साथ-साथ करो

आज मीठी दादी जी का सन्देश लेकर वतन में जाना हुआ। बापदादा ने जाते ही दूर से अशरीरी स्थिति की अनुभूति का बहुत मीठा सुन्दर अनुभव कराते हुए मिलन मनाया। कुछ समय बाद बाबा बोले, बच्ची साकार वतन का क्या हालचाल लाई हो? मैंने दादी का सन्देश सुनाया कि वर्तमान समय

के वायुमण्डल प्रमाण याद की तपस्या ज़रूरी लगती है, इसलिए वह प्रोग्राम्स ज़्यादा रखें। बाबा बोले, बापदादा तो अब हर मुरली में बच्चों को भिन्न-भिन्न इशारे देते रहते हैं कि समय अनुसार अब आवश्यकता है - सेवा करते भी मनसा शक्ति की सेवा भी साथ-साथ हो। कर्म और योग, बैठते भी और चलते-फिरते भी साथ हो। लेकिन बच्चों को अब तक वाणी की शक्ति का अभ्यास और रुचि ज़्यादा है। मनसा और वाणी दोनों साथ-साथ रहें यह अभ्यास बहुत कम है। इसलिए सेवा में ही संस्कारों का विघ्न ज्यादा आता है। बापदादा तो यही चाहते हैं कि अब एक ही समय मनसा शक्ति द्वारा अनुभूति कराने का अनुभव और वाणी की शक्ति द्वारा सन्देश देने का कर्त्तव्य दोनों का बैलेन्स हो। अभी तक इसमें कमी है। इसलिए जब तक दोनों साथ-साथ का अभ्यास कम है तो योग भट्ठी के प्रोग्राम्स होते भी मन-बुद्धि फ्री है तो और ही व्यर्थ संकल्प बोल-चाल में मन ज्यादा जायेगा, इसलिए सेवा के प्रोग्राम्स भी बनाने पड़ेंगे लेकिन टू मच जल्दी और एक दो को देख, हमारे वर्ग का भी प्रोग्राम २ बार हो यह रेस की भावना बदलनी चाहिए। एक प्रोग्राम के बाद एक दिन विशेष याद का रखना ज़रूरी है, जिसमें स्थूल कर्म करते भी याद का चार्ट अच्छा रखने का, कर्म और योग के पावरफुल अभ्यास का अटेन्शन ज़रूरी है। सिर्फ सेवा में बिजी रहना है, यह आवश्यकता नहीं है लेकिन बैलेन्स द्वारा आत्माओं को अनुभूति करानी है। इसके लिए अपनी श्रेष्ठ स्थिति, अपना शुभ चिन्तन शुभ वृत्ति, निरसंकल्प स्टेज में बहुत ध्यान देना ज़रूरी है।

उसके बाद मैंने बाबा को बताया कि दादी जी इस वर्ष फारेन में जाने के लिए पूछ रही हैं क्योंकि कइयों ने अपने जाने के लिए आफर की है। बाबा बोले, बच्ची समय अनुसार जितना आना-जाना कम हो उतना अच्छा है। बाकी जहाँ जिस आत्मा का जाना बहुत ज़रूरी है उनके लिए तो जाना ही पड़ेगा। बाकी फारेन सेवा में फारेन वाले ही एक-दो को मदद करें तो अच्छा है।